मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

**"मीठे बच्चे - अब यह नाटक पूरा होता है, तुम्हें वापिस घर जाना है, इसलिए इस दुनिया से ममत्व मिटा दो, घर को और नये राज्य को याद करो"**

**प्रश्नः- दान का महत्व कब है, उसका रिटर्न किन बच्चों को प्राप्त होता है?**

**उत्तरः**-दान का महत्व तब है जब दान की हुई चीज में ममत्व न हो। अगर दान किया फिर याद आया तो उसका फल रिटर्न में प्राप्त नहीं हो सकता। दान होता ही है दूसरे जन्म के लिए इसलिए इस जन्म में तुम्हारे पास जो कुछ है उससे ममत्व मिटा दो। ट्रस्टी होकर सम्भालो। यहाँ तुम जो ईश्वरीय सेवा में लगाते हो, हॉस्पिटल वा कॉलेज खोलते हो उससे अनेकों का कल्याण होता है, उसके रिटर्न में 21 जन्मों के लिए मिल जाता है।

**ओम् शान्ति।** बच्चों को अपना घर और अपनी राजधानी याद है? यहाँ जब बैठते हो तो बाहर के घरघाट, धन्धे-धोरी आदि के ख्यालात नहीं आने

चाहिए। बस अपना घर ही याद आना है। अब इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में रिटर्न है, यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। सब स्वाहा हो जायेगा आग में। जो कुछ इन ऑखों से देखते हो, मित्र-सम्बन्धी आदि यह सब खत्म हो जाना है। यह ज्ञान बाप ही रूहों को समझाते हैं। बच्चों, अब वापिस अपने घर चलना है। नाटक पूरा होता है। यह है ही 5 हज़ार वर्ष का चक्र। दुनिया तो है ही, परन्तु उनको चक्र लगाने में 5 हज़ार वर्ष लगते हैं। जो भी आत्मायें हैं सब वापस चली जायेंगी। यह पुरानी दुनिया ही खत्म हो जायेगी। बाबा बहुत अच्छी तरह हर एक बात समझाते हैं। कोई-कोई मनहूस होते हैं तो मुफ्त अपनी जायदाद गँवा बैठते हैं। भक्ति मार्ग में दान-पुण्य तो करते हैं ना। कोई ने धर्मशाला बनाई, कोई ने हॉस्पिटल बनाई, बुद्धि में समझते हैं इनका फल दूसरे जन्म में मिलेगा। बिगर कोई आश, अनासक्त हो कोई करे - ऐसा होता नहीं है। बहुत कहते हैं फल की चाहना हम नहीं रखते हैं। परन्तु नहीं, फल अवश्य मिलता है। समझो कोई के पास पैसा है, उनसे धर्माऊ दे दिया

Click

Click

Example

समझा?

*Very Subtle Point to understand*

तो बुद्धि में यह रहेगा हमको दूसरे जन्म में मिलेगा। अगर ममत्व गया, मेरी यह चीज़ है ऐसा समझा तो फिर वहाँ नहीं मिलेगा। दान होता ही है दूसरे जन्म के लिए। जबकि दूसरे जन्म में मिलता है तो फिर इस जन्म में ममत्व क्यों रखते, इसलिए ट्रस्टी बनाते हैं तो अपना ममत्व निकल जाए। कोई अच्छे साहूकार के घर में जन्म लेते हैं तो कहेंगे उसने अच्छे कर्म किये हैं। कोई राजा-रानी के पास जन्म लेते हैं, क्योंकि दान-पुण्य किया है परन्तु वह है अल्पकाल एक जन्म की बात। अभी तो तुम यह पढ़ाई पढ़ते हो। जानते हो इस पढ़ाई से हमको यह बनना है, तो दैवीगुण धारण करना है। यहाँ दान जो करते हो उनसे यह रूहानी युनिवर्सिटी, हॉस्पिटल खोलते हैं। दान किया तो फिर उनसे ममत्व मिटा देना चाहिए क्योंकि तुम जानते हो हम भविष्य 21 जन्म के लिए बाप से लेते हैं। यह बाप मकान आदि बनाते हैं। यह तो टैप्रेरी है। नहीं तो इतने सब बच्चे कहाँ रहेंगे। देते हैं सब शिवबाबा को। धनी वह है। वह इनके द्वारा यह कराते हैं। शिवबाबा तो राज्य नहीं करता। खुद है ही दाता।

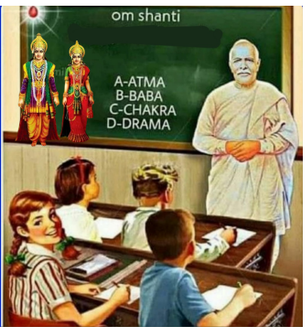

अब तो जागो...

अब घर जाना है...

उनका ममत्व किसमें होगा! अभी बाप श्रीमत देते हैं कि मौत सामने खड़ा है। आगे तुम किसको देते थे तो मौत की बात नहीं थी। अब बाबा आया है तो पुरानी दुनिया ही खत्म होनी है। बाप कहते हैं मैं आया ही हूँ इस पतित दुनिया को खत्म करने। इस रुद्र यज्ञ में सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। जो कुछ अपना भविष्य बनायेंगे तो नई दुनिया में मिलेगा। नहीं तो यहाँ ही सब कुछ खत्म हो जायेगा। कोई न कोई खा जायेगा। आजकल मनुष्य उधार पर भी देते हैं। विनाश होगा तो सब खत्म हो जायेंगे। कोई किसको कुछ देगा नहीं। सब रह जायेगा। आज अच्छा है, कल देवाला निकाल देते। कोई को भी कुछ पैसा मिलने का नहीं है। कोई को दिया, वह मर गया फिर कौन बैठ रिटर्न करते हैं। तो क्या करना चाहिए? भारत के 21 जन्मों के कल्याण लिए और फिर अपने 21 जन्मों के कल्याण के लिए उसमें लगा देना चाहिए। तुम अपने लिए ही करते हो। जानते हो श्रीमत पर हम ऊंच पद पाते हैं, जिससे 21 जन्म सुख-शान्ति मिलेगी। इनको कहा जाता है

महाकाल उवाच:

27. किनकी दवी रही धूल में, किनकी राजा खाए, किनकी चोर लूट ले जाए, किनकी आग जलाये, सफल होय उनकी जो धनी के नाम लगाये।
अन्त समय में स्थूल धन कई तरह से विनष्ट होगा लेकिन जो अपना

28 —•—•—•—•— कहावतें और कहानियाँ
धन इस समय परमात्मा के कार्य में खर्च करते हैं उनका धन अनेक जन्मों के लिए सफल होता जाता है।

श्रीमत of श्री श्री शिव भगवान

अविनाशी बाबा की रूहानी हॉस्पिटल और युनिवर्सिटी, जिससे हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस मिलती है। कोई को हेल्थ है, वेल्थ नहीं तो हैप्पीनेस रह नहीं सकती। दोनों हैं तो हैप्पी भी रहते हैं। बाप तुमको 21 जन्मों के लिए दोनों देते हैं। वो 21 जन्मों के लिए जमा करना है। बच्चों का काम है युक्ति रचना। बाप के आने से गरीब बच्चों की तकदीर खुल जाती है। बाप है ही गरीब निवाज़। साहूकारों की तकदीर में ही यह बातें नहीं हैं। इस समय भारत सबसे गरीब है। जो साहूकार था वही गरीब बना है। इस समय सब पाप आत्मायें हैं। जहाँ पुण्य आत्मा हैं वहाँ पाप आत्मा एक भी नहीं। वह है सतयुग सतोप्रधान, यह है कलियुग तमोप्रधान। तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो सतोप्रधान बनने का। बाप तुम बच्चों को स्मृति दिलाते हैं तो तुम समझते हो बरोबर हम ही स्वर्गवासी थे। फिर हमने 84 जन्म लिए हैं। बाकी 84 लाख योनियाँ तो गपोड़ा है। क्या इतना जन्म जानवर योनि में रहे! यह पिछाड़ी का मनुष्य का मर्तबा है? क्या अब वापिस जाना है?

**गरीब नवाज**

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

Translation

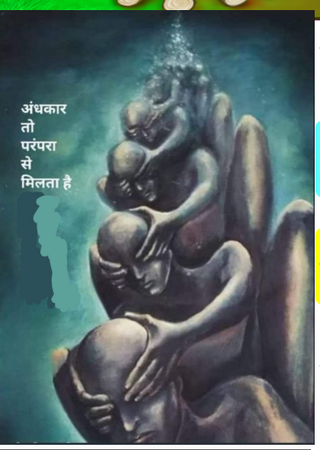

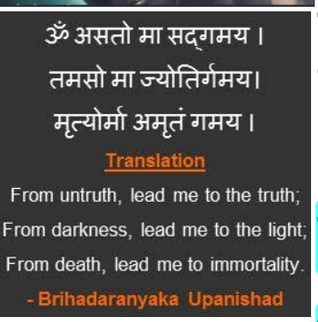

From untruth, lead me to the truth;
From darkness, lead me to the light;
From death, lead me to immortality.
- Brihadaranyaka Upanishad

अब बाप समझाते हैं - मौत सामने खड़ा है। 40-50 हज़ार वर्ष हैं नहीं। मनुष्य तो बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं इसलिए कहा जाता है पत्थरबुद्धि। अभी तुम पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनते हो। यह बातें कोई संन्यासी आदि थोड़ेही बता सकते हैं। अब तुमको बाप स्मृति दिलाते हैं कि वापिस जाना है। जितना हो सके अपना बैग बैगेज ट्रांसफर कर दो। बाबा, यह सब लो, हम सतयुग में 21 जन्म लिए पा लेंगे। यह बाबा भी तो दान-पुण्य करते थे। बहुत शौक था। व्यापारी लोग दो पैसा धर्माऊ निकालते हैं। बाबा एक आना निकालते थे। कोई भी आये तो दरवाजे से खाली न जाये। अभी भगवान सम्मुख आये हैं, यह किसको पता नहीं है। मनुष्य दान-पुण्य करते-करते मर जायेंगे फिर कहाँ मिलेगा? पवित्र बनते नहीं, बाप से प्रीत रखते नहीं। बाप ने समझाया है यादव और कौरवों की है विनाश काले विप्रीत बुद्धि। पाण्डवों की है विनाश काले प्रीत बुद्धि। यूरोपवासी सब यादव हैं जो मूसल आदि निकालते रहते हैं। शास्त्रों में तो क्या-

क्या बातें लिख दी हैं। ढेर शास्त्र बने हुए हैं, ड्रामा प्लैन अनुसार। इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। प्रेरणा माना विचार। बाकी ऐसे थोड़ेही बाप प्रेरणा से पढ़ाते हैं। बाप समझाते हैं यह भी Brahmababa एक व्यापारी था। अच्छा नाम था। सभी इज्ज़त देते थे। बाप ने प्रवेश किया और इसने गाली खाना शुरू कर दी। शिवबाबा को जानते नहीं। न उनको गाली दे सकते हैं। गाली यह खाते हैं। श्रीकृष्ण ने कहा ना - मैं नहीं माखन खायो। यह भी कहते हैं काम तो सब कुछ बाबा का है, मैं कुछ नहीं करता हूँ। जादूगर वह है, मैं थोड़ेही हूँ। मुफ्त में इनको गाली दे देते हैं। हमने कोई को भगाया क्या? किसको भी नहीं कहा कि तुम भागकर आओ। हम तो वहाँ थे, यह आपेही भाग आये। मुफ्त में दोष डाल दिया है। कितनी गाली खाई। क्या-क्या बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। बाप समझाते हैं यह फिर भी होगा। यह है सारी ज्ञान की बात। कोई मनुष्य यह थोड़ेही कर सकता है। सो भी ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के राज्य में कोई के पास इतनी कन्यायें-मातायें बैठ जाएं। कोई कुछ कर न सके। कोई के सम्बन्धी आते थे

Experience of Sweet Brahma Baba

Beginning of yagya

तो एकदम भगा देते थे। बाबा तो कहते थे भल इनको समझाकर ले जाओ। मैं कोई मना थोड़ेही करता हूँ परन्तु किसकी हिम्मत नहीं होती थी। बाप की ताकत थी ना। नथिंग न्यू। यह फिर भी सब होगा। गाली भी खानी पड़े। द्रौपदी की भी बात है। यह सब द्रौपदियां और दुशासन हैं, एक की बात नहीं थी। शास्त्रों में यह गपोड़े किसने लिखे? बाप कहते हैं यह भी ड्रामा में पार्ट है। आत्मा का ज्ञान ही कोई में नहीं है, बिल्कुल ही देह-अभिमानी बन पड़े हैं। देही-अभिमानी बनने में मेहनत है। रावण ने बिल्कुल ही उल्टा बना दिया है। अब बाप सुल्टा बनाते हैं।

Be Prepared

Scene from तिलस्म movie हातिमताई



देही-अभिमानी बनने से स्वत: स्मृति रहती है कि हम आत्मा हैं, यह देह बाजा है, बजाने लिए। यह स्मृति भी रहती तो दैवीगुण भी आते जाते हैं। तुम किसको दु:ख भी नहीं दे सकते। भारत में ही इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। 5 हज़ार वर्ष की बात है। अगर कोई लाखों वर्ष कहते हैं तो घोर अन्धियारे में हैं। ड्रामा अनुसार जब समय पूरा

Attention Please...!

Click

हुआ है तब बाप फिर से आया है। अब बाप कहते हैं हमारी श्रीमत पर चलो। मौत सामने खड़ा है। फिर अन्दर की जो कुछ आश है, वह रह जायेगी। मरना तो है जरूर। यह वही महाभारत लड़ाई है, जितना अपना कल्याण कर सको उतना अच्छा है। नहीं तो तुम हाथ खाली जायेंगे। सारी दुनिया हाथ खाली जानी है। सिर्फ तुम बच्चे भरतू हाथ अर्थात् धनवान हो जाते हो। इसमें समझने की बड़ी विशालबुद्धि चाहिए। कितने धर्म के मनुष्य हैं। हर एक की अपनी एक्ट चलती है। एक की एक्ट न मिले दूसरे से। सबके फीचर्स अपने-अपने हैं, कितने सारे फीचर्स हैं, यह सब ड्रामा में नूँध है। वन्डरफुल बातें हैं ना। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा 84 का चक्र लगाती हैं, हम आत्मा इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। फिर ट्राई करना भी फालतू है। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाए, दूसरा कोई एड हो जाए - यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।

अब तो जागो...

जी मेरे मीठे बाबा...

Mind very Well

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

एक घड़ी आधी घड़ी..... यह याद करो फिर उनको बढ़ाते जाओ। 8 घण्टा भल स्थूल सर्विस करो, आराम भी करो, इस रूहानी गवर्नमेन्ट की सर्विस में भी टाइम दो। तुम अपनी ही सर्विस करते हो, यह है मुख्य बात। याद की यात्रा में रहो, बाकी ज्ञान से ऊंच पद पाना है। याद का अपना पूरा चार्ट रखो। ज्ञान तो सहज है। जैसे बाप की बुद्धि में है कि मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ, इनके आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ। हम भी बाबा के बच्चे हैं। बाबा ने यह समझाया है, कैसे यह चक्र फिरता है। उस कमाई के लिए भी तुम 8-10 घण्टा देते हो ना। अच्छा ग्राहक मिल जाता है तो रात को कभी उबासी नहीं आती है। उबासी दी तो समझा जाता है कि यह थका हुआ है। बुद्धि कहाँ बाहर भटकती होगी। सेन्टर्स पर भी बड़ा खबरदार रहना है। जो बच्चे दूसरों का चिन्तन नहीं करते हैं, अपनी पढ़ाई में ही मस्त रहते हैं उनकी उन्नति सदा होती रहती है। तुम्हें दूसरों का चिन्तन कर अपना पद भ्रष्ट नहीं करना है। हियर नो इविल, सी नो इविल..... कोई अच्छा नहीं बोलता है तो

समझा?

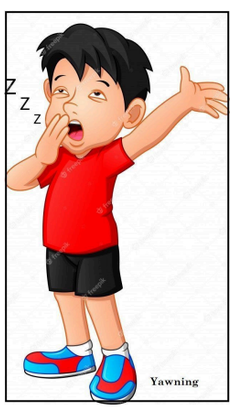


m.m.m. Imp.

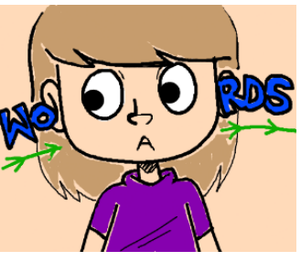




Always

एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो। हमेशा अपने को देखना चाहिए, न कि दूसरों को। अपनी पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। बहुत ऐसे रूठ पड़ते हैं। आना बन्द कर देते हैं, फिर आ जाते हैं। नहीं आयेंगे तो जायेंगे कहाँ? स्कूल तो एक ही है। अपने पैर पर कुल्हाड़ा नहीं लगाना है। तुम अपनी पढ़ाई में मस्त रहो। बहुत खुशी में रहो। भगवान पढ़ाते हैं बाकी क्या चाहिए। भगवान हमारा बाप, टीचर, सतगुरू है, उनसे ही बुद्धि का योग लगाया जाता है। वह है सारी दुनिया का नम्बरवन माशूक जो तुमको नम्बरवन विश्व का मालिक बनाते हैं।

हम कितने महान है वो जानने के लिए देखो इसको
(भक्ति मार्ग में सिर्फ उसको पाने के लिए कितना तड़पी है आत्माएं...)

Click

जी मेरे मीठे बाबा...

बाप कहते हैं तुम्हारी आत्मा बहुत पतित है, उड़ नहीं सकती। पंख कटे हुए हैं। रावण ने सभी आत्माओं के पंख काट दिये हैं। शिवबाबा कहते हैं मेरे बिगर कोई पावन बना नहीं सकता। सब एक्टर्स यहाँ हैं, वृद्धि को पाते रहते हैं, वापिस कोई जाते नहीं। अच्छा!

No one means No one

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

## धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं के चिंतन और पढ़ाई में मस्त रहना है। दूसरों को नहीं देखना है। अगर कोई अच्छा नहीं बोलता है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल देना है। रूठ करके पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

Most imp

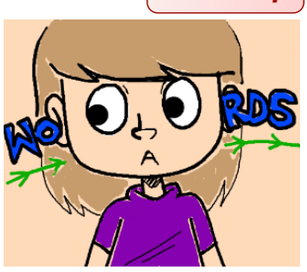

Just like Eklavya or Karna, Without thumb or kavach-kundal He was Nothing...

2) जीते जी सब कुछ दान करके अपना ममत्व मिटा देना है। पूरा विल कर ट्रस्टी बन हल्का रहना है। देही-अभिमानी बन सर्व दैवीगुण धारण करने हैं।

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

# वरदान:- भिन्नता को मिटाकर एकता लाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

Finale Achievement

ब्राह्मण परिवार की विशेषता है अनेक होते भी एक।

आपकी एकता द्वारा ही सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना होती है इसलिए विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाओ और एकता को लाओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

Definition of

Always Remember...

सेवाधारी स्वयं प्रति नहीं लेकिन सेवा प्रति होते हैं। स्वयं का सब कुछ सेवा प्रति स्वाहा करते हैं, जैसे साकार बाप ने सेवा में हड्डियां भी स्वाहा की ऐसे आपकी हर कर्मेन्द्रिय द्वारा सेवा होती रहे।

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

**स्लोगन**:-परमात्म प्यार में खो जाओ तो दु:खों की दुनिया भूल जायेगी।

सर्वोच्च परमात्म प्यार में खोने के लिये ===> Click

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

# अव्यक्त इशारे - "कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो"

सदा स्मृति रखो कि कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके।

No one means No one... has dare to Seperate us...

प्यार की निशानी है कम्बाइण्ड रहना। यह आत्मा और परमात्मा का साथ है।

परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाला है।

"फाइनल पेपर" book से "अव्यक्त बापदादा" के महावाक्य जो यहां रखते हैं, तो नये महावाक्य हर तीसरे दिन पर रखेंगे जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि erase से हो जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

यहाँ पर रखे गए महावाक्यों का वीडियो Revision के लिए ====> Click



(1) कोई भी डायरेक्शन (2) कभी भी (3) किसी रूप से, (4) कहाँ के लिये भी निकले और (5) कितने समय में भी निकल सकता, (6) एक सेकेण्ड में तैयार होने का डायरेक्शन भी निकल सकता है। तो ऐसे एवररेडी सभी बने हैं? जैसे अशुद्ध प्रवृत्ति को छोड़ने के लिये कोई बात सोची क्या? जेवर, कपड़े, बाल-बच्चे आदि कुछ भी नहीं देखा ना। तो यह जैसे पवित्र प्रवृत्ति है, इसमें फिर यह बातें देखने की क्या आवश्यकता है। आगे सिर्फ स्नेह में थे, स्नेह से यह सभी किया, ज्ञान से नहीं। सिर्फ स्नेह ने ऐसा एवररेडी बनाया। अब स्नेह के साथ शक्ति भी है। स्नेह और शक्ति होते हुए भी फिर इसमें एवररेडी बनने में देरी क्यों? जैसे शुरू में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है; वैसे अब भी रिपीट जरूर होना है लेकिन भिन्न-भिन्न रूप में। ऐसे नहीं कि बापदादा भविष्य को जानकर के आप सभी को एलान देवें और आप इस सर्विस के बन्धन में भी अपने को बांधे हुए रखो। बन्धन होते हुए भी बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना-यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात 'पास विद आनर्स' की पास करनी है।

समझा?

Attention Please...!

Be Prepared

जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर मे जो पास होंगे वही 'पास विद आनर्स' होंगे। इसलिये पहले से ही सुना रहे हैं। पहले से ही ईशारा मिल रहा है। इसको कहा जाता है - महीनता में जाना। जो महीन बुद्धि होंगे उनकी विशेषता क्या होगी? महीन बुद्धि वाले (1) कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। (2) जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे। (3) सामना करने का उनमें साहस होगा। (4) वह कभी घबरायेंगे नहीं, लेकिन उसकी गहराई में जाकर अपने को उसी रीति चलायेंगे। तो जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे। (5) नर्म और गर्म - दोनों ही होंगे तब मोल्ड होंगे। एक की भी कमी होगी तो मोल्ड नहीं हो सकेंगे। कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है - शक्ति-रूप। निर्माणता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही निर्माणता में रह सकेंगे। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन

Characteristics of

ALERT

ये पक्का समझ लो...

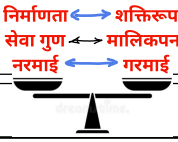

Very Powerful Balance



सकेंगे, न नम्रचित। इसलिए निर्माणता और फिर शक्ति रूप अर्थात् जितनी निर्माणता उतना ही फिर मालिकपना। शक्तिरूप में है मालिकपना और नम्रता में सेवागुण। सेवा भी और मालिकपना भी। सेवाधारी भी हो और विश्व के मालिकपने का नशा भी हो। जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे। समझा?

Point for Self Analysis

हरेक को यह देखना है कि हमारी बुद्धि की तराजू गर्म और नर्म दोनों में एक समान रहती है? कहाँ-कहाँ अति निर्माणता भी नुकसान करती है और कहाँ अति मालिकपना भी नुकसान करता है, इसलिए दोनों की समानता चाहिए। जितनी समानता होगी उतनी महानता भी। अब समझा कि किस एक बात में 'पास विद आनर' होंगे? यह फाइनल पेपर का पहले एनाउंस कर रहे हैं। हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान निकले और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुंचा। यह फाइनल पेपर है जो समय पर निकलेगा - प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गये तो और कोई बड़ी बात नहीं। इस पेपर में पास होंगे अर्थात् अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए तो बाकी क्या बड़ी बात है। ***

Attention..!

इससे ही परखेंगे कि कहाँ तक अपने उस जीवन की नईया की रस्सियाँ छोड़ी हैं। एक है सोने की जंजीर, दूसरी है लोहे की। लोहे की जंजीर तो छोड़ी, लेकिन अब सोने की भी महीन जंजीर हैं। यह फिर ऐसी है जो कोई को देखने में भी आ न सके।

इसलिये जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते वैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सकें। नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे। फाइनल पेपर है-अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें -यह है 'पास विद ऑनर' की निशानी। लेकिन वह तब हो सकेगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। अगर टाइटनेस होगी तो सहज मुक्त नहीं हो सकेंगे। टाइटनेस का अर्थ है कोई से लगाव। इसलिए अब यही सिर्फ एक बात चेक करो - ऐसा लूज चोला हुआ है जो एक सेकेण्ड में इस चोले को छोड़ सकें? अगर कहाँ भी अटका हुआ होगा तो निकलने में भी अटक होगी। इसी को ही एवररेडी कहा जाता है। ऐसे एवररेडी वही होंगे जो हर बात में एवररेडी होंगे। प्रैक्टिकल में देखा





Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ना - एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावें - यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी। चोले से इज़ी होने से चोला छोड़ना भी इज़ी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए। यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे, तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा। इसलिए इससे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब जायेंगे, उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है। पीछे ऐसी-ऐसी अनोखी मृत्यु बच्चों के होनी हैं जो 'सन शोज़ फादर' करेंगे। सभी का एक जैसा नहीं होगा। कई ऐसे बच्चे भी हैं जिन्हों का ड्रामा के अन्दर इस मृत्यु के अनोखे पार्ट का गायन 'सन शोज़ फादर' करेगा। यह भी वही कर सकेंगे जिसमें एक विशेष गुण होगा। यह पार्ट भी बहुत थोड़ों का है। अन्त तक भी बाप की प्रत्यक्षता करते जायेंगे। यह भी बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। अन्त घड़ी भी बाप का शो होता रहेगा। ऐसी आत्मायें जरूर कोई पावरफुल होंगी जिनका बहुत समय से अशरीरी रहने का अभ्यास होगा वह एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायेंगे। मानो अभी आप याद में बैठते हो,कैसे भी विघ्नों की अवस्था में बैठते हो, कैसी भी परिस्थितियां सामने होते हुए भी बैठते हो-लेकिन एक सेकेण्ड में सोचा और अशरीरी हो जायें। वैसे तो एक सेकेण्ड में अशरीरी होना बहुत सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के बहुत झंझट सामने हो परन्तु प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकेण्ड, सेकेण्ड भी बहुत है, सोचना और करना साथ-साथ चले। सोचने के बाद पुरुषार्थ न करना पड़े। अभी तो आप सोचते हो तब उस अवस्था में स्थित होते हो, लेकिन ऐसा जो होगा उनका सोचना और स्थित होना साथ में होगा,सोच और स्थिति में फर्क नहीं होगा। सोचा और हुआ। ऐसे जो अभ्यासी होंगे वही सर्विस

समझा?

याद रहे...

करने का पान का बीड़ा उठा सकेंगे। ऐसे कोई निमित्त हैं लेकिन बहुत थोड़े, मैजारिटी नहीं हैं,मैनारिटी हैं, उन्हों के ऊपर यहाँ ही फूल बरसायेंगे। ऐसे जो 'पास विथ आनर'होंगे, उन्हीं के ऊपर जो द्वापर के भक्त हैं वह अन्त में इस साकार रूप में फूलों की वर्षा करेंगे। जो अन्त तक 'सन शोज़ फादर' करके ही जायेंगे। ऐसा सर्विसएबुल मृत्यु होता है। इस मृत्यु से भी सर्विस होती है। सर्विस के प्रति बच्चे ही निमित्त हैं, ना कि माँ-बाप। वह तो गुप्त रुप में हैं। सर्विस में मात-पिता बैकबोन हैं और बच्चे सामने हैं। इस सर्विस के पार्ट में मात-पिता का पार्ट नहीं है, इस में बच्चे ही बाप का शो करेंगे। यह भी सर्विस का अन्त में मैडल प्राप्त होता है, ऐसा मैडल ड्रामा में कोई-कोई बच्चों को मिलना है। अभी हरेक अपने आप से जज करे कि हम ऐसा मैडल प्राप्त करने लिए निमित्त बन सकते हैं? ऐसे नहीं सिर्फ पुरानी बहनें ही बन सकेंगी। कोई भी बन सकते हैं। नये-नये रत्न भी हैं जो कमाल कर दिखायेंगे।

अभी सर्विस में नवीनता लानी है। जैसे अपने में नवीनता लाते हो वैसे सर्विस में भी नवीनता लानी है। नवीनता लाने की 5 बातें याद रखनी हैं सभी के मुख से यह निकले कि यह कहाँ से आई हैं! जैसे शुरू में निकलता था। परन्तु शुरू में वाणी का बल नहीं था। अभी तुमको वाणी का बल है। लेकिन अलौकिक स्थिति का बल गुप्त हो गया है। छिप गया है। इसलिए अब फिर से ऐसी अलौकिकता सभी को दिखानी है जो सभी महसूस करें कि जैसे शुरू में भट्ठी से निकली हुई आत्मायें कितनी सेवा के निमित्त बनी, अब फिर से सृष्टि के दृश्य को चेंज करने के निमित्त बनी हैं। उनसे अभी की सर्विस बड़ी है। तो ऐसी शक्तिरूप और स्नेह-रूप बन जाना है-कितने भी हजारों के बीच खड़े हो,तो भी दूर से अलौकिक व्यक्ति नजर आओ। जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं, कोई भी अनजान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। तो फालो फादर। उन्हों के वायब्रेशन अपने में नहीं लाना, अपने वायब्रेशन से उन्हों को अलौकिक बनाना - यही नवीनता लानी है। अभी सर्विस के

ऐसे थे मेरे ब्रह्मा बाबा..



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

कारण कुछ संसारी लोगों में मिक्स लगते हैं। सर्विस के प्रति सम्बन्ध में रहते भी न्यारे रहने का जो मंत्र है - उसको नहीं भूलना। अभी वह संबंध जो रखना था सो रख लिया, अभी इस रीति संबंध रखने की भी आवश्यकता नहीं। सर्विस कारण अपने को हल्का करने की भी जरूरत नहीं। वह समय बीत चुका। अभी लौकिक के बीच अलौकिक नज़र आओ। अनेक व्यक्तियों के बीच अव्यक्त मूर्त लगे। वह व्यक्त देखने में आयें, आप अव्यक्त देखने में आओ-यह है परिवर्तन। शुरू में कोई के वायब्रेशन अथवा संग में अपने में परिवर्तन लाते थे? इसलिए कहते थे ब्रह्माकुमारी में हठ बहुत है। लेकिन वह हठ अच्छा था ना। यह है ईश्वरीय हठ। इसलिए अब वायब्रेशन के बीच रहते अपने को न्यारा और प्यारा बनाना है। इतनी सर्विस नहीं करेंगे? सिर्फ वाणी से कुर्बान नहीं होते। आप लोगों ने कैसे कुर्बानी की? आन्तरिक आत्म-स्नेह से। प्रजा तो बहुत बनाई लेकिन अब कुर्बान करना है। यह सर्विस रही हुई है। वारिस कम और प्रजा ज्यादा बनाई है। क्योंकि वाणी से प्रजा बनती है लेकिन ईश्वरीय स्नेह और शक्ति से वारिस बनते हैं। तो वारिस बनाने हैं। यह फर्स्ट स्टेज का पुरुषार्थ है। वाणी से किसी को पानी नहीं कर सकते लेकिन स्नेह और शक्ति से एक सेकेण्ड में स्वाहा करा सकते हैं। यह भी अन्त में मार्क्स मिलते हैं- वारिस कितने बनाये, प्रजा कितनी बनाई; वारिस भी किस वैराइटी और प्रजा भी किस वैराइटी की और कितने समय में बनें। फाइनल पेपर आज सुना रहे हैं। किस-किस क्वेश्चन पर मार्क्स मिलते हैं? एक तो यह क्वेश्चन अन्तिम रिजल्ट में होगा। दूसरा सुनाया- अन्त तक सर्विस का शोक। और तीसरी बात थी, आदि से अन्त तक जो अवस्था चलती आई है उसमें कितना बारी फेल हुए हैं। पूरा पोतामेल एनाउन्स होगा। कितने बारी विजयी बने और कितने बारी फेल हुए और विजय प्राप्त की तो कितने समय में। कोई भी समस्या को सामना करने में कितना समय लगा- उनकी भी मार्क्स मिलेगी। तो सारे जीवन की सर्विस और स्व-स्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत - यह तीन बातें देखी जाती हैं।

11/04/25 **(20.12.1969)**

Definition of

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

Mind it..!



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.